डालास (टेक्सास) संयुक्त राज्य अमेरिका
सितम्बर १०, २०००

सन्देश संख्या २६

सत् और धर्म

समझदारी की ऊर्जा आपके अस्तित्व की ठोस, सच्ची एवं पवित्र सत्ता है।

मान्यताओं में उलझाव आपके 'अनुभवों' पर आधारित, छल–कपट से युक्त, पाखण्ड–पूर्ण एवं मिथ्या धर्म है।

सत् मानस सागर के पार है।

धर्म की स्थिति मन की तरंगों के भीतर है।

धर्म, मन के रचनातंत्र से उत्पन्न प्रथाओं एवं प्रतीकों में, एकरूपता की अपेक्षा करता है।

सत् मन की व्याधियों और उपाधियों से परे व्यापक समझदारी पर आधारित है।

धर्म के आवरण को उतार फेकें तथा उसके अन्दर के यथार्थ का रसास्वादन करें ।

यही लाहिड़ी महाशय का क्रियायोग हैं।

जय हनुमान.....
समर्पण एवं शांति के प्रतीक